89

विजय या त्रासदी

बाइबल पाठ #39

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमशः)।

ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमशः)।

8. यहूदा की मृत्यु: आत्महत्या (मत्ती 27:3-10; प्रेरितों 1:18, 19)।

9. यीशु की मृत्यु: क्रूसारोहण

क. क्रूस का सफ़र (मत्ती 27:31ख-34; मरकुस 15:20ख-22; लूका 23:26-33; यूहन्ना 19:17)।

ख. क्रूस पर पहले तीन घण्टे (आरम्भ हुए) (मत्ती 27:35, 37-39; मरकुस 15:23-29; लूका 23:33, 38; यूहन्ना 19:18-22)।

परिचय

प्रेरित यूहन्ना ने कहा है कि यदि यीशु द्वारा किए गए सभी काम "... एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं कि पुस्तकें जो लिखी जातीं, वे जगत में भी न समातीं" (यूहन्ना 21:25)। उसी तरीके से मसीह के जीवन की एक ही घटना अर्थात क्रूस पर उसकी मृत्यु के बारे में लिखी गई बातें हैं। उन कुछ घण्टों से कितनी पुस्तकें और लेख, संदेश और गीत, चित्र और कला के महान अन्य काम करने की प्रेरणा मिली है!

यह याद करने पर कि यीशु के जीवन की हर बात उसकी मृत्यु की ओर, और उसी का पूर्वाभास थी, क्रूस का इतना प्रभाव हमें चकित नहीं करता (देखें मत्ती 1:21; लूका 1:31; 2:30, 35[1])। कई अवसरों पर उसने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी (देखें मत्ती 16:21; 17:22, 23; लूका 18:31-33)। वास्तविक घटना से कई महीने पहले, "उस ने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया" (लूका 9:51), जहां उसे पता था कि वह मरेगा। गुलगुता में मसीह के छह घण्टे (मरकुस 15:25, 33, 34, 37) उसकी सेवकाई का चरम थे।[2]

दो भाग वाले पिछले पाठ में, हमने पिलातुस को देखा था कि उसने झिझकते हुए यहूदियों की मांगें मानकर यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दी थी। यीशु के मुकदमों के दौरान कहीं, यहूदा ने जिसने उसे पकड़वाया था, आत्महत्या कर ली। यह पाठ उस घटना से आरम्भ होकर क्रूस पर मसीह की मृत्यु की कहानी से जुड़ेगा। उस घटना के महत्व के कारण, यह दो भागों वाला एक और पाठ होगा।[3]

इस प्रस्तुति में, यहूदा की मृत्यु और यीशु की मृत्यु में अन्तर किया जाएगा। कई अन्तरों पर ध्यान दिलाया जाएगा। यहूदा फंदा लगाकर मरा; यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। यहूदा अपने ही हाथों मरा, जबकि यीशु, दूसरों के हाथों मरा। यहूदा को उसके अपने विवेक ने दोषी ठहराया, जबकि यीशु को यहूदियों द्वारा दोषी ठहराया गया और पिलातुस द्वारा दण्ड दिया गया। परन्तु हम विशेष तौर पर यह ध्यान देना चाहते हैं कि यहूदा की मृत्यु जहां एक *त्रासदी* थी, वहीं यीशु की मृत्यु एक *विजय:* यहूदा एक पश्चात्तापी आत्मघाती के रूप में मरा, परन्तु यीशु परमेश्वर के निष्कलंक पुत्र के रूप में। प्रासंगिकता बनाने पर, यह प्रश्न पूछा जाएगा: ''*आपकी* मृत्यु विजय होगी या फिर त्रासदी?''

त्रासदी (मत्ती 27:3-10; प्रेरितों 1:18, 19)

हम नहीं जानते कि घटनाओं की शृंखला में यहूदा की आत्महत्या के वृत्तांत को कहां पर रखें। मत्ती 27 में इस कहानी को ''... महायाजकों और लोगों के पुरनियों'' द्वारा यीशु को ''पिलातुस हाकिम के हाथ में सौंप'' देने के बाद रखा गया है (आयतें 1, 2) और हो सकता है ऐसे ही हुआ हो। परन्तु ध्यान दें कि जब यहूदा ''तीस चांदी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया'' तो वे पिलातुस के न्याय के सिंहासन के सामने नहीं, बल्कि ''मन्दिर में'' थे (आयतें 3, 5)। शायद यीशु की मृत्यु के लिए राज्यपाल के सहमत हो जाने के बाद, प्रबन्ध होने तक,[4] महायाजक अपनी प्रात:काल की ड्यूटियों के लिए मन्दिर में चले गए थे और यहूदा को वे नहीं मिले।[5]

जो भी हो, यीशु के मुकदमों के दौरान कहीं, ''जब ... यहूदा ने देखा कि दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया'' (आयत 3क)। इस बात से कि मसीह को दोषी ठहराया गया है, स्पष्टतया यहूदा चकित हुआ। उसके दिमाग में होगा कि यीशु निर्दोष है (आयत 4), इसलिए वे उसे गिरफ्तार करने के अलावा और कष्ट नहीं पहुंचाएंगे, जिससे उसे तीस सिक्के भी मिल जाएंगे।[6] परन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि यीशु मारा जाएगा, तो यहूदा का विवेक देरी से सही, पर जाग उठा।

यहूदा ने अपने काम देने वालों को मन्दिर में ढूंढ़कर उन्हें यीशु को पकड़वाने के बदले मिला धन लौटाने की कोशिश की (आयत 3ख), परन्तु उन्होंने लेने से इनकार कर दिया।[7] उसने कहा, ''मैंने निर्दोष को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है'' (आयत 4क)। तिरस्कार से उन्होंने उत्तर दिया, ''हमें क्या? तू ही जान'' (आयत 4ख)। विद्रोह करने वालों को वे लोग बाद में ऐसे ही ठुकराते हैं, जिनके लिए वे काम करते हैं।

निर्दयी, पत्थर दिलों से हारकर, यहूदा ने कठोर फर्श पर वह धन फैंक दिया और ''चला गया'' (आयत 5क)–परन्तु वह कहां जा सकता था? यहूदी पुरोहितों ने उसे ठुकरा दिया था और दूसरे प्रेरितों को वह अपना मुंह नहीं दिखा सकता था। मैं यहूदा को यरूशलेम की गलियों में से दक्षिण की ओर ठोकरें खाते हुए, फसह मनाने के लिए इकट्ठी हुई लोगों की भीड़ में से होते हुए, नगर की दक्षिणी दीवारों के बाहर कुम्हार के एक खेत में पहुंचते देखता हूं।[8] वहां जाकर उसने ''अपने आप को फांसी दी'' (आयत 5ख)।

यहूदा के चले जाने के बाद, महायाजकों ने विचार किया कि उन तीस सिक्कों का क्या किया जाए। उन्होंने कहा, ''इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है'' (आयत 6)। इस पर पुराने नियम की कोई व्यवस्था नहीं है, सो उन्होंने अवश्य ही अपने बनाए नियमों की बात की होगी। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने उनकी विमुखता पर टिप्पणी की है:

> उनका विवेक अजीब ही था, जिसने प्रभु का धन लेकर ... इसे लहू के लिए खर्च किया, परन्तु खर्च करने के बाद वे इसे वापस नहीं ले सके! इससे भी बढ़कर, उनकी स्वीकृति अजीब थी। यदि यूहदा को दिया गया धन सचमुच किसी अपराधी को पकड़वाने के लिए दिया जाता तो यह न्याय का धन होता, लहू का मोल कदापि नहीं![9]

इन अधिकारियों ने उस धन का इस्तेमाल ''कुम्हार का खेत'' खरीदने के लिए करने का निर्णय लिया (आयत 7)। ''कुम्हार का खेत'' भूमि का एक टुकड़ा होगा, जिसे कुम्हार मिट्टी निकालने के लिए इस्तेमाल करता होगा।[10] क्योंकि ऐसा खेत खेतीबाड़ी के योग्य नहीं होगा, इसलिए इसे सस्ते दाम पर खरीदा जा सकता था। यहूदी अगुओं ने उस खेत को ''परदेशियों के गाड़ने के लिए ... मोल ले लिया'' (आयत 7ख)।[11] ''परदेशियों'' उन गैर यहूदियों को कहा गया होगा, जिनकी मृत्यु यरूशलेम में रहने के समय हो जाती थी। अन्यजातियों को यहूदी कब्रिस्तानों में गाड़ने के लिए जगह नहीं दी जाती थी।

मत्ती ने परमेश्वर की प्रेरणा से यह टिप्पणी जोड़ी: ''इस कारण वह खेत आज तक लोहू का खेत कहलाता है'' (आयत 8)। यानी, उस खेत को ''लहू का खेत'' इसलिए कहा जाता था, क्योंकि इसे ''लहू के दाम'' से खरीदा गया था (आयत 6)। ''आज तक'' वाक्यांश से संकेत मिलता है कि मत्ती के इसे लिखने के समय और उस घटना में कुछ समय बीत गया था (शायद लगभग तीस वर्ष)।

अपनी आदत के अनुसार, मत्ती ने यह भी लिखा कि यह घटना भविष्यवाणी का पूरा होना थी:

> तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ; कि उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात उस ठहराए हुए मूल्य को जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था, ले लिया। और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया (आयत 9, 10)।

9 और 10 आयतों के शब्द यिर्मयाह की पुस्तक में नहीं मिलते, पर ऐसे ही शब्द जकर्याह की पुस्तक में मिलते हैं (जकर्याह 11:12, 13)। इस स्पष्ट अनियमितता के कई कारण बताए गए हैं। हो सकता है कि यिर्मयाह के *कहे गए* शब्द बाद में जकर्याह द्वारा लिखे गए हों।[12] शायद यिर्मयाह का नाम इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर की प्रेरणा से जकर्याह कुम्हार के बारे में (यिर्मयाह 18:1-6; 19:1-13) और खेत खरीदने (यिर्मयाह 32:9) के बारे में यिर्मयाह के शब्दों से प्रभावित था।[13]

मत्ती की पुस्तक ही सुसमाचार का एकमात्र वृत्तांत हैं, जिसमें यहूदा की मृत्यु के बारे में लिखा गया है; परन्तु बाद में लूका ने प्रेरितों के काम में यहूदा की जगह कहानी के साथ सम्बन्ध में इसका उल्लेख किया:

> ... यहूदा ... जो यीशु के पकड़ने वालों का अगुवा था, ... ने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। और इस बात को यरूशलेम के सब रहने वाले जान गए, यहां तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में हकलदमा अर्थात लोहू का खेत पड़ गया (प्रेरितों 1:16-19)।

आलोचकों ने वही बात पकड़ी है, जो उन्हें लगा कि दो वृत्तांतों में विरोधाभास है: (1) मत्ती ने कहा है कि याजकों ने खेत मोल लिया (मत्ती 27:7) जबकि लूका ने कहा है कि यह यहूदा ने लिया था (प्रेरितों 1:18)। (2) मत्ती ने कहा है कि यहूदा ने फांसी लगा ली (मत्ती 27:5), जबकि लूका ने संकेत दिया है कि यहूदा ''सिर के बल'' गिरकर मरा था (प्रेरितों 1:18)। (3) मत्ती ने कहा है कि लहू के दाम से खरीदने के कारण उसे ''लहू का खेत'' कहा जाता था (मत्ती 27:6, 8), जबकि लूका ने संकेत दिया है कि इसका नाम इसमें यहूदा का लहू बिखरने के कारण पड़ा (प्रेरितों 1:18, 19)। परन्तु दोनों संस्करणों को मिलाना कठिन नहीं है:

- याजकों ने खेत यहूदा के पैसों से खरीदा, इसलिए तकनीकी रूप से वह खरीद उसी की थी और खेत भी उसी का था।
- यहूदा ने अपने आप को कुम्हार के खेत में लगे एक पेड़ पर फांसी लगा ली होगी। क्योंकि लाश के पास जाना यहूदी लोगों में औपचारिक अशुद्धता माना जाता था, इसलिए किसी ने उसे छुआ नहीं होगा (विशेषकर पर्व के दौरान)। यहूदा की लाश वहां पड़ी रही और गलकर खेत में गिरने से फट गई।[14]
- उस सम्पत्ति को ''लहू का खेत'' कहने के *दो* कारण थे। एक कारण मत्ती ने दिया, जबकि दूसरा लूका ने।

दोनों वृत्तांतों को मिलाने से इस बात को और बल मिलता है कि यहूदा की मृत्यु एक *त्रासदी* थी। यीशु ने कहा था ''... उस मनुष्य के लिए शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता'' (मत्ती 26:24)। परमेश्वर से एक प्रार्थना में, मसीह ने यहूदा को ''विनाश का पुत्र'' कहा था (यूहन्ना 17:12)-यानी जो ''विनाश के लिए ठहराया गया'' था (NIV)। पतरस ने बाद में प्रेरिताई के उस पद की बात की ''जिसे यहूदा छोड़कर अपने स्थान को चला गया'' (प्रेरितों 1:25)। भलाई करने की उसकी क्षमता के कारण प्रभु द्वारा उसे उठाया गया था।[15] यहूदा ने अपने अवसर गंवा दिए और अपने आप को दोषी ठहराकर विद्रोही की मौत मर गया।

यदि यहूदा अपने आप को न मारता? यदि वह बाद में क्षमा मांग लेता? तो मेरा

विश्वास है कि यीशु उसे वापस स्वीकार कर लेता[16] जैसे उसने पतरस को किया था, जिसने उसका इनकार किया। यहूदा ने अपने आप को परमेश्वर के अनुग्रह पर क्यों नहीं छोड़ा? इसका उत्तर मत्ती 27:3 में यूनानी शब्द के अनुवाद ''पछताया'' में सुझाया जाता है: ''जब ... यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है, तो वह पछताया ...।''

KJV और RSV में कहा गया है कि यहूदा ने ''मन फिराया,'' परन्तु यूनानी में यहां ''मन फिराया'' के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द नहीं है। ''मन फिराना'' के लिए शब्द *metanoeo* है, जिसका इस्तेमाल मन के बदलने के लिए होता है।[17] मनुष्य पर लागू करने पर, इसका संकेत मन का महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। परन्तु मत्ती 27:3 में प्रयुक्त शब्द *metamellomai* है, जो पिछले किए कार्य के लिए चिंतित होने को दर्शाता है[18] परन्तु मन फिराने से कम है।[19] मैकोर्ड के अनुवाद में ''पछतावे से भरा'' है।[20] NCV में इसका अनुवाद ''बहुत दुखी था'' है। AB में इस शब्द को इस प्रकार दर्शाया गया है:

> उसके पकड़वाने वाले, यहूदा ने जब देखा कि [यीशु] को दण्ड दिया गया है, तो [यहूदा मन में दुखी हुआ और अपनी मूर्खता के लिए परेशान; और] खेद से [परिणामों के स्वार्थी भय से थोड़ा अधिक] वह चांदी के तीस सिक्के वापस ले आया। ... [21]

यहूदा के विवेक ने उसे प्रताड़ित किया, पर वह बदला नहीं। वह पछताया पर उसने पश्चात्ताप नहीं किया। अपने विश्वास को छोड़ और मन को कठोर करने के कारण, उसकी आशा जाती रही थी। उसके प्रताड़ित मन ने उस दुविधा से निकलने का रास्ता केवल मृत्यु में देखा।[22] यहूदा की आत्महत्या से एक व्यर्थ हुए जीवन का दुखद अन्त हो गया।

विजय (मत्ती 27:31-35, 37-39; मरकुस 15:20-29; लूका 23:26-33, 38; यूहन्ना 19:17-22)

अब यहूदा की कहानी से यीशु की कहानी में वापस आ जाएं। हमारे यह विवरण छोड़ने के समय, उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने की तैयारियां चल रही थीं: आज्ञा दी जाने वाली थी, सिपाहियों को दण्ड देने का जिम्मा सौंपा जाना था (देखें यूहन्ना 19:23; मत्ती 27:54), एक दोष पत्री लिखी जानी थी (मत्ती 27:37), और कागज़ी कार्यवाही पूरी की जानी थी।[23] प्रात: 9:00 बजे से थोड़ा पहले[24] सब कुछ तैयार था और जुलूस उत्तर की ओर चल दिया।[25]

जुलूस

इंचार्ज सूबेदार (देखें मत्ती 27:54) ने इस समूह की अगुआई की होगी। उसके पीछे मृत्यु दण्ड के दोषी थे: यीशु और दो साधारण अपराधी (लूका 23:32)। उनके पीछे सिपाही थे, जो उन्हें धक्के मारते हुए ले जा रहे थे। पीछे दर्दनाक दृश्य को देखने वाली लोगों की भीड़ थी। कुछ लोग तमाशा देखने के लिए आ गए होंगे, पर कुछ महिलाएं रो भी रही थीं (लूका 23:27)।

रीति के अनुसार, यात्रा का आरम्भ यीशु के ''अपना क्रूस उठाने'' से हुआ (यूहन्ना 19:17)। ''पूरे क्रूस का भार 136 किलोग्राम से अधिक होगा, इसलिए'' सम्भवतया ''34 से 57 किलोग्राम'' भारी ''एक ही अर्गला ले जाया गया'' होगा।[26] यीशु पूरे रास्ते इतना भार नहीं ले जा सकता था। रात भर जागने, लगातार अपमानित होने और रोमी कोड़े खाने के बाद, उसकी हिम्मत जवाब दे चुकी होगी।[27] सिपाहियों को उसकी सहायता के लिए कोई आदमी ढूंढ़ना पड़ा: ''सिकन्दर और रूफुस का पिता, शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य, जो गांव से आ रहा था, उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले'' (मरकुस 15:21)।

कुरेने उत्तर केन्द्रीय अफ्रीका (अब लीबिया) के कुरेनेका जिले की राजधानी थी। कुरेनी यहूदियों का यरूशलेम में एक आराधनालय था (प्रेरितों 6:9)। सिपाहियों द्वारा उसे पकड़ने के समय शमौन सम्भवतया मन्दिर में प्रात:काल की प्रार्थना के लिए नगर में आ रहा था।[28] उसे कितना धक्का लगा होगा!

यह कि मरकुस ने शमौन के दो बेटों के नाम दिए शायद इस बात का संकेत है कि उसे उम्मीद थी कि उसके पाठक उनके नाम से उन्हें पहचान लेंगे। रूफुस रोमियों 16:13 में पौलुस द्वारा बताया गया रूफुस हो सकता है। कुरेनी यहूदी शायद पिन्तेकुस्त के दिन परिवर्तित हुए थे (प्रेरितों 2:10, 37, 41)। बाद में कुरेनी मसीहियों ने यीशु का सुसमाचार फैलाया था (प्रेरितों 11:20)।

उस शहतीर को मसीह के कंधों से उतारकर शमौन के कंधों पर रखने के बाद जुलूस आगे बढ़ा (लूका 23:26)।[29] पर्व मनाने के लिए आए यात्रियों से भरी भीड़ गलियों में से होते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रही होगी। एक जगह तो शायद जब ये लोग रुके, तो यीशु ने भीड़ में रो रही स्त्रियों से बात करने के लिए सामर्थ जुटाई:

> हे यरूशलेम की पुत्रियो,[30] मेरे लिए मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिए रोओ। क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया। उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, कि हम पर गिरो, और टीलों से कि हमें ढांप लो। क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा? (लूका 23:28-31)।

यीशु की बातें आने वाले यरूशलेम के घेरे और विनाश के विषय में थीं (66-70 ईस्वी)। वह विनाशकारी घटना बच्चों और स्त्रियों के लिए इससे भी भयंकर होनी थी।[31] आयत 30 होशै 10:8 से ली गई है, जो *किसी* भी प्रकार की सुरक्षा के इच्छुक निराश लोगों की पुकार है।

मसीह की बात का अंतिम वाक्य यह संकेत देता है कि यदि यहूदी ''हरे पेड़'' (यीशु) के साथ ऐसा कर रहे थे, तो कल्पना करें कि उन्होंने ''सूखे [पेड़]'' (यरूशलेम)

के साथ क्या करना था। इस पर एक और तरह से विचार करें: यदि रोमियों ने यीशु के साथ ऐसा किया जो रोम के विरुद्ध बगावत में *निर्दोष* था, तो उन्होंने यरूशलेम के लोगों द्वारा वास्तव में ऐसे बग़ावत के *दोषी* होने पर उनके साथ कितना भयंकर बर्ताव करना था (जैसा कि 60वें दशक में हुआ)। मसीह का रूपक इस तथ्य पर आधारित था कि हरे पौधे जीवित होते हैं, पर सूखे पौधे मुर्दा। यानी वह तो आत्मिक रूप से जीवित था, जबकि यरूशलेम व्यावहारिक रूप से मरा हुआ था।[32]

गन्तव्य

भीड़ भरी गलियों के कारण जुलूस थम गया और शीघ्र ही फिर चल पड़ा। इनका गन्तव्य क्रूसारोहरण के लिए ठहराया गया एक स्थल था: ''जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है।[33] और इब्रानी में गुलगुता'' (यूहन्ना 19:17; देखें मत्ती 27:23; मरकुस 15:22; लूका 23:33क)। लातीनी भाषा में इसे ''कलवरी'' कहा जाता था (देखें लूका 23:33; KJV)।[34]

गुलगुता ''फाटक के बाहर'' (इब्रानियों 13:12) ''नगर के पास'' (यूहन्ना 19:20) था, स्पष्टतया आवाजाही वाले मार्ग के नजदीक था (देखें मत्ती 27:39; मरकुस 15:29)। अधिकतर लोगों का मानना है कि यह नगर की दीवार के उत्तर में, उत्तर से यरूशलेम में जाने वाले एक मार्ग के निकट था। यह सम्भवतया ऊंचाई पर बना एक प्रसिद्ध स्थान था। क्योंकि रोमियों ने क्रूस पर चढ़ाने का ढंग विद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए बनाया था। इसमें तीन पक्के सीधे डंडे रहते ही थे, जो अगले शिकार के लिए तैयार होते थे।[35]

वर्षों से, गुलगुता के लिए दो स्थान बताए जाते रहे हैं। पारम्परिक स्थल वह स्थान है, जहां चौथी शताब्दी में ''द चर्च ऑफ़ द होली सपलकर'' बना था। उन्नीसवीं शताब्दी में चार्ल्स गोर्डन ने दमिश्क के फाटक से एक चौथाई मील उत्तर पूर्व में ''गोर्डन'स कलवरी''[36] (या ''द ग्रीन हिल'') के नाम से प्रसिद्ध एक वैकल्पिक स्थान बताया था।[37] वह स्थान जहां भी था, हम यह नहीं बता सकते कि उसे ''खोपड़ी का स्थान'' क्यों कहा जाता था। कुछ लोगों का मानना है कि गोर्डन'स कलवरी में खोपड़ी जैसी एक चट्टान है, पर वह जगह केवल मृत्यु का स्थान होने के कारण बताई गई हो सकती है।

क्रूस पर चढ़ाया जाना

जुलूस अन्ततः गन्तव्य पर पहुंच गया। कैदियों के वस्त्र खींच दिए गए,[38] और उन्हें पित्त मिला हुआ दाखरस पीने को दिया गया (मत्ती 27:34; मरकुस 15:23)।[39] यह दर्द निवारक चखकर, यीशु ने इसे लेने से इनकार कर दिया (मत्ती 27:34)। उसने दुखों का कटोरा पीकर बेहोशी की दवा लेने से इनकार कर दिया (देखें यूहन्ना 18:11)।

फिर ''उन्होंने ... उसे और उन कुकर्मियों को ... क्रूस पर चढ़ाया'' (लूका 23:33)। आरम्भिक पाठक जिन्होंने क्रूस पर चढ़ाया जाना देखा था, समझते थे कि इन कुछ शब्दों में कितना कुछ है। क्रूस के आड़े शहतीर भूमि पर रख दिए गए थे। कठोर हाथों ने कैदियों को भूमि पर गिरने और अपने हाथ उन शहतीरों पर फैलाने के लिए विवश किया। दण्ड देने वाला[40]

हाथ खींचता और इसे कलाई पर लोहे का लम्बा कील ठोकते हुए पकड़कर रखता।[41] कुछ ही कुशल प्रहारों से कांप रहे शरीर में से मेख लकड़ी में गाड़ देता। फिर वह दूसरे हाथ की ओर जाता और वही प्रक्रिया दोहराता। कैदी को कीलों से ठोक लेने के बाद, दोनों शहतीर और क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति को सिपाहियों द्वारा उठाया जाता और क्रूस के शहतीर सीधे कर दिए जाते। आड़े शहतीर टिकाकर, क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति के घुटने झुकाकर उसके पांव (या टखनों) में से मेख शहतीर में ठोकी जाती (देखें लूका 24:39, 40)।[42]

कई प्रकार के क्रूसों का इस्तेमाल किया जाता था जिसमें अंग्रेज़ी के बड़े अक्षर "T" जैसा लगने वाला टाऊ क्रूस और ✝ से मेल खाता अधिक प्रचलित लातीनी क्रूस था।[43] टाऊ क्रूस होने पर आड़ा शहतीर सीधे डण्डे के ऊपर कीलों से जोड़ दिया जाता था। लातीनी क्रूस के सम्बन्ध में आड़े शहतीर को सिरे के निकट सीधे शहतीर के आगे लगाया जाता था। "मसीह के समय में रोमियों द्वारा टाऊ क्रूस को प्राथमिकता दी जाती थी," परन्तु "अलग-अलग क्षेत्रों में क्रूस पर चढ़ाए जाने के अलग-अलग ढंग थे।"[44] बाइबल से बाहर की आरम्भिक परम्परा के अनुसार, यीशु को लातीनी क्रूस पर चढ़ाया गया था। यह तथ्य कि यीशु के सिर के ऊपर एक दोषपत्री लगाई गई थी (मत्ती 27:37; देखें यूहन्ना 19:19) इस परम्परा का समर्थन कर सकता है।

"[यीशु] के साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बायें क्रूसों पर चढ़ाए गए" (मत्ती 27:38; देखें मरकुस 15:27)। इससे यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हुई कि मसीहा ने "अपराधियों के संग गिना" जाना था (यशायाह 53:12; देखें लूका 23:33; मरकुस 15:28)। मत्ती 27:38 में यूनानी शब्द का अनुवाद "डाकू" यूहन्ना 18:40 में बरअब्बा के वर्णन के लिए इस्तेमाल शब्द का बहुवचन रूप है।[45] शब्द में हिंसा समाई हुई है।[46] सम्भव है कि दोनों "डाकू" बरअब्बा की तरह एक ही बलवे में लिप्त हों। यह भी हो सकता है कि बीच वाला क्रूस लोगों के "[यीशु] का काम तमाम कर, और हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दे" (लूका 23:18) चिल्लाने से पहले उस कुख्यात बागी के लिए बनाया गया हो।

तीनों कैदियों को उनके क्रूसों पर चढ़ा देने के बाद जल्लाद को एक अन्तिम कार्य करना था: उनके सिरों पर दोष पत्रियां लगाना। दोष पत्री लगाने का उद्देश्य उन लोगों के विरुद्ध लगे आरोपों की घोषणा करना था (देखें मत्ती 27:37; मरकुस 15:26)। पिलातुस ने स्वयं बताया था कि यीशु के सिर के ऊपर "**यह यीशु नासरी, यहूदियों का राजा है**"[47] लिखा जाए। ये शब्द "इब्रानी, लातीनी और यूनानी में लिखे" गए थे (यूहन्ना 19:20)।

ישוע הנצרי מלך היהודים
Iesus Nazarenus Rex Iudæorum
Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος ὁ Βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων

इब्रानी, यहूदियों की भाषा थी, लातीनी रोम की कानूनी भाषा थी और यूनानी सब लोगों द्वारा बोली जाने वाली सामान्य भाषा थी। वहां से गुज़रने वाले अधिकतर लोग यदि सभी नहीं तो इनमें से कम से कम एक भाषा तो अवश्य पढ़ सकते थे।

महायाजकों ने आपत्ति जताई।[48] उन्होंने पिलातुस से कहा, ''यहूदियों का राजा मत लिख परन्तु यह कि ''उस ने *कहा,* मैं यहूदियों का राजा हूं'' (यूहन्ना 19:21)। परन्तु राज्यपाल ने शब्द बदलने से इनकार कर दिया। उसने उत्तर दिया, ''मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया''(यूहन्ना 19:22)। यह विजय तो छोटी थी, पर पिलातुस को अच्छी लगी होगी।

भोर और दोपहर के बीच का समय था (मरकुस 15:25)। तीन लोगों को रोमी क्रूसों पर चढ़ाया गया था। गुलगुता में इधर-उधर बिखरे रोमी सिपाही, यहूदी पुरोहित, असंगत भीड़ और मसीह के मुट्ठी भर अनुयायी थे (यूहन्ना 19:25)। दृश्य यीशु के छह घण्टों के कष्ट और उसकी मृत्यु के लिए तैयार था।

कहानी को हम इस पाठ के दूसरे भाग में आगे बढ़ाएंगे। समाप्त करने से पहले, मैं फिर कहना चाहता हूं कि यहूदा की मृत्यु की त्रासदी के विपरीत यीशु की मृत्यु एक विजय थी। उस समय यह विजय नहीं *लगती* थी, पर वास्तव में यह एक विजय *थी* क्योंकि ...

- यीशु परमेश्वर की इच्छा पूरी तरह से मानकर मरा (लूका 22:42)। कोई भी जो परमेश्वर की इच्छा को मानता है विजयी ही है, (देखें प्रकाशितवाक्य 2:7)।[49]
- यीशु विश्वास में, यह मानकर मरा कि परमेश्वर उसे जिलाने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा। उस समय हो या अब, विश्वास वह विजय है, जिससे संसार पर विजय मिलती है (1 यूहन्ना 5:4)।
- आज्ञा मानते हुए अपनी मृत्यु में, यीशु ने दुष्ट की शक्तियों को हराया (इब्रानियों 2:14)।
- अपनी बलिदानपूर्वक मृत्यु में यीशु ने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए और हमारा उद्धार सम्भव बनाया (यशायाह 53:4-6; 1 कुरिन्थियों 15:3; 2 कुरिन्थियों 5:21)!
- क्रूस पर यीशु ने उस काम को पूरा किया, जिसे वह करने के लिए आया था (यूहन्ना 19:30)।

सारांश

मैंने कई जनाज़ों पर प्रचार किया है और कई जनाज़ों पर ऐसे भी गया हूं। उनमें कुछ विजयें थीं; अफ़सोस कि कुछ त्रासदियां भी थीं। आपका जनाज़ा क्या होगा? आपकी मृत्यु सम्भवतया यहूदा की मृत्यु की तरह त्रासदी नहीं होगी और निश्चय ही यह यीशु की मृत्यु की तरह विजय भी नहीं। तौ भी आपकी ''धर्मियों की सी मृत्यु'' (गिनती 23:10) और ''दुष्टों की मृत्यु'' (यहेजकेल 33:11) में से एक ही होगी। आपके जीवन से ही तय होगा

कि आप बाद में कैसी मृत्यु पाएंगे। आपकी मृत्यु एक विजय होगी या त्रासदी?

नोट्स

यदि आप दो भाग वाले इस पाठ का इस्तेमाल अलग-अलग करते हैं, तो आप को इस प्रस्तुति के बाद प्रचार करने के लिए अतिरिक्त प्रवचन की आवश्यकता होगी।

यहूदा पर प्रचार करना

एक सम्भावना यहूदा का पात्र अध्ययन है। यहूदा पर एक प्रवचन ''मसीह का प्रचार करना'' में मिलेगा; परन्तु यदि अपने अध्ययन में जो कुछ यहूदा के बारे में कहा गया है आप उसमें से लें, तो आप को प्रवचन के लिए काफ़ी सामग्री मिल जाएगी। एक और विकल्प यहूदा के धोखे और पतरस के इनकार में पश्चात्ताप और पछतावे में अन्तर करते हुए भिन्नता बताना है।

एक और ढंग मन फिराव पर पाठ के लिए आरम्भ के रूप में यहूदा की कही गई तीन बातों का इस्तेमाल करना है: ''मैंने पाप किया है'' (देखें मत्ती 27:4)। बाइबल में केवल कुछेक लोगों ने ही माना है कि ''मैंने पाप किया है।'' उनमें फिरौन (निर्गमन 9:27; 10:16), बिलाम (गिनती 22:34), आकान (यहोशू 7:20), राजा शाऊल (1 शमूएल 15:24, 30; 26:21) और यहूदा हैं (मत्ती 27:4)। इन संदेहास्पद पात्रों के विपरीत, दाऊद (2 शमूएल 12:13; 24:10) और उड़ाऊ पुत्र (लूका 15:21) के शब्द भी थे। इस बात पर बल दें कि बाद के अंगीकारों से अंगीकार करने वाले परमेश्वर के अधिक निकट आए जबकि पहले नहीं।

क्रूस का प्रचार करना

एक अतिरिक्त प्रवचन के लिए एक अलग सम्भावना यीशु की मृत्यु पर *सामान्य* प्रवचन देना है, यद्यपि हमने क्रूसारोहण पर अपना अध्ययन पूरा नहीं किया है। जैसा कि इस प्रस्तुति के परिचय में संकेत दिया गया था, क्रूस पर प्रवचन देने की सामग्री की कोई कमी नहीं है। एक जवान प्रचारक के रूप में मेरा पसंदीदा संदेश ''वहां उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया'' होता था। वर्षों से मैंने किसी भी अन्य विषय से अधिक यीशु की मृत्यु पर ही सिखाया, प्रचार किया और लिखा होगा। मेरी एक पुस्तक *जीज़स क्राइस्ट एण्ड हिम क्रूसीफाइड* आरम्भिक पुस्तकों में से थी। यह शीर्षक 1 कुरिन्थियों 2:2 में पौलुस के शब्दों से लिया गया: ''मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं।''

क्रूस को दर्शाने वाले पाठ तैयार करने का एक अच्छा ढंग प्रस्तुतियों से पहले सप्ताह में दिन में दो बार लूका 23:26-56 पढ़ना है।

टिप्पणियां

[1]कई हवाले केवल इसलिए दिए गए हैं कि यीशु ने उद्धारकर्त्ता होना था। उदाहरण के लिए, ''यीशु'' का अर्थ है ''यहोवा बचाता है'' परन्तु यीशु का बचाने का *ढंग* अपनी मृत्यु के द्वारा है (रोमियों 5:10)। [2]यदि वर्षों के प्रयास का चरम कुछ घण्टों, मिनटों या सैकंडों में बताने का उदाहरण चाहिए, तो आप ओलम्पिक खेलों के लिए अभ्यास करने वालों पर विचार करें। वे वर्षों तक प्रशिक्षण लेते हैं, परन्तु खेलों के दौरान उनकी बारी केवल कुछ ही मिनटों या सैकंडों में पूरी हो जाती है। [3]यदि यह आवश्यक है कि ब्यालीस सप्ताह की समय सारणी बनाई रखी जाए, तो आप इन दो भागों को मिलाकर संक्षिप्त कर लें। यदि समय की कोई समस्या नहीं है, तो आप इस सामग्री को दो अलग-अलग क्लासों में बता सकते हैं। [4]जैसा पिछले पाठ में देखा गया था, इन तैयारियों के लिए कई घण्टे का समय लगा। [5]महायाजक बाद में गुलगुता में थे (मत्ती 27:41)। यदि वे एक दो घण्टे के लिए मन्दिर में नहीं गए, तो वे बाद में हत्या के स्थान पर चले गए। [6]हम पक्का नहीं कह सकते कि यहूदा ने क्या सोचा होगा। अन्य सम्भावनाओं का सुझाव दिया गया है। [7]उनके इनकार का संकेत 4 और 5 आयतों से मिलता है। [8]स्पष्टतया, यहूदा ने कुम्हार के खेत में फांसी लगा ली, जिसे बाद में महायाजकों द्वारा खरीदा गया था (इस पाठ में इस पर आगे चर्चा की गई है)। चौथी शताब्दी से इस खेत के परम्परागत स्थान यरूशलेम के दक्षिण में हिन्नोन की घाटी में पूर्वी सिरे की दक्षिणी ढलान मानी जाती है। पृष्ठ 180 पर ''यरूशलेम नगर (यीशु के अन्तिम घण्टों में सुझाए गए मार्ग)'' का मानचित्र देखें। [9]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914) 721. [10]कुछ लोगों का विचार है कि यह केवल कुम्हार से खरीदा गया एक खेत था, जिसमें मिट्टी हो भी सकती है और नहीं भी। कइयों का विचार है कि ''कुम्हार का खेत'' खेत का नाम ही था, जो किसी वास्तविक कुम्हार से सम्बन्धित हो भी सकता है और नहीं भी।

[11]अमेरिका में, ''कुम्हार का खेत'' सरकार द्वारा लावारिस लोगों को दफ़नाने के लिए अलग से रखे गए कब्रिस्तानों को कहा जाता था। [12]यिर्मयाह के शब्द बाबुल की दासता से पहले के थे, जबकि जकर्याह की सेवकाई इसके बाद की थी। परन्तु यिर्मयाह के कहे कुछ अलिखित शब्द आगे दिए गए हो सकते हैं-या शायद पवित्र आत्मा ने जकर्याह को उनके बारे में बता दिया। [13]अन्य सम्भावनाओं का उल्लेख किया जा सकता है। मैक्गर्वे का विचार था कि एक आरम्भिक प्रतिलिपिक ने ''जकर्याह'' को ''यिर्मयाह'' लिख दिया होगा। इब्रानी में, इसमें केवल दो अक्षरों को बदलने की आवश्यकता थी (मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 721-22)। [14]इससे सम्पत्ति का दाम बहुत कम हो गया होगा, जिससे चांदी के केवल तीस सिक्कों से इसके खरीदे जाने की बात समझ आती है। [15]यहूदा को धोखा देने की उसकी क्षमता के कारण नहीं चुना गया था, बल्कि एक चेले के रूप में उसकी क्षमता के कारण चुना गया था। [16]यदि कोई आपत्ति करना चाहता है कि यीशु ने यहूदा पर ''हाय'' क्यों कही, मैं उसे याद दिलाता हूं कि न्याय के लिए परमेश्वर की घोषणाओं को सच्चे मन फिराव से बदला जा सकता है। योना की भविष्यवाणी एक उदाहरण है कि नीनवे नष्ट किया जाना था (योना 3:4): जब लोगों ने मन फिराया, तो परमेश्वर ने उस नगर को छोड़ दिया (योना 3:5-10)। [17]''मन फिराव'' (*metanoeo*) का अनुवाद एक मिश्रित यूनानी शब्द से किया गया है, जो ''बाद'' (*meta*) के साथ ''विचार'' (*noemoa*) को मिलाकर बनता है। इसका मूल अर्थ ''बाद का विचार'' है और किसी के अपने विचार को *बदलने* का संकेत देता है। मन फिराव ''मन का बदलना'' है (देखें मत्ती 21:29; इब्रानियों 12:17) जो जीवन के बदलने का कारण बनता है (प्रेरितों 26:20)। मन फिराव को आम तौर पर ''*पाप* के विषय में मन बदलने'' अर्थात सामान्य अर्थ में पाप करना छोड़ने और विशेष पाप करना छोड़ने के अर्थ में लिया जाता है। मन फिराव ईश्वरीय शोक का परिणाम है। (देखें 2 कुरिन्थियों 7:10: ''परमेश्वर भक्ति का शोक ...'' ''सांसारिक शोक'' से अलग दिखाया जाता है, जो किसी के पाप का *परिणाम* होता है।) [18]यूनानी शब्द ''के बाद'' अर्थ वाले उपसर्ग के साथ ''सम्भालना'' को मिलाने वाले शब्द का मिश्रण है। इसका अर्थ घटना ''के बाद'' ''देखभाल करना'' या चिंता करना है। [19]2 कुरिन्थियों 7:10 में दिए गए दोनों ''शोकों'' की तुलना करें। [20]ह्यूगो मेकोर्ड, *मेकोर्ड'स न्यू टैस्टामेंट ट्रांसलेशन ऑफ़ द एवरलास्टिंग गॉस्पल* (हैंडर्सन,

टैनिसी: फ्रीड हार्डमैन यूनिवर्सिटी, 1988), 40.

[21]*एम्पलीफाइड बाइबल* में *metamellomai* शब्द के कई विस्तार मेरविन आर. विंसेंट और रिचर्ड सी. ट्रेंच सहित यूनानी शब्द अध्ययन की कई पुस्तकों से किया गया है। [22]आत्महत्या पर अध्ययन करने वालों का कहना है कि आत्महत्या करने वाले लोग आम तौर पर अपने आप को मारना को एकमात्र विकल्प के रूप में देखते हैं। अनुग्रहकारी परमेश्वर पर विश्वास करने वाले जानते हैं कि उन्हें एक और विकल्प दिया जाता है: अपने पापों का अंगीकार करना, परमेश्वर से क्षमा मांगना और नये सिरे से आरम्भ करना। [23]अधिकारियों द्वारा किए गए मुकदामों की लिखित रिपोर्टें रोम को भेजी गई थी। [24]मृत्यु का दण्ड देने के स्थान पर पहुंचने के लिए समय लगा होगा और यीशु को लगभग 9 बजे प्रात: क्रूस पर चढ़ाया गया था (मरकुस 15:25)। [25]नगर के उत्तर में गुलगुता के सम्भावित स्थान के बारे में, पाठ में आगे चर्चा देखें। [26]विलियम डी. एडवर्ड्स, वैसली जे. गेबल, एण्ड फ्लाइड ई. पोसमर, ''ऑन द फिजिकल डैथ ऑन द जीज़स क्राइस्ट,'' *जरनल ऑफ़ द अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन* (21 मार्च 1986): 1459. [27]पूरे पलिश्तीन के जंगली इलाकों में घूमने से प्रमाणित होता है कि उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट था, परन्तु वह हमारी तरह ही शरीर की निर्बलताओं में था (देखें यूहन्ना 1:14क; इब्रानियों 4:15)। [28]रोमी कानून के अनुसार, सिपाही, लोगों को उनकी सहायता के लिए विवश कर सकते थे (देखें मत्ती 5:41)। [29]क्रूस की ओर जाने वाले मार्ग पर यीशु के जाने का परम्परागत मार्ग है (डोलोरोसा से होते हुए), परन्तु हमें सही-सही रास्ता मालूम नहीं है। रोमी सिपाही क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान तक घुमावदार मार्ग से जाते थे, जो रोम का विरोध करने के परिणामों के बारे में एक प्रदर्शनी की तरह था। [30]ये स्त्रियां वे नहीं थीं जो गलील से यीशु के पीछे आई थीं (मत्ती 29:55) बल्कि यरूशलेम की रहने वाली थीं। हम यह नहीं जानते कि ये स्त्रियां यीशु की चेली थीं या केवल एक निर्दोष के रूप में उसकी मृत्यु से दुखी थीं।

[31]*नियम* यह है कि जिनके बच्चे हैं उन्हें परमेश्वर की आशीष मिली है (देखें भजन संहिता 127:3), पर यीशु ने इसे *अपवाद* कहा। [32]आप चाहें तो इस उदाहरण को विस्तार दे सकते हैं: यदि आग इतनी तेज़ हो कि उसमें गीली लकड़ियां जल जाएं, तो कल्पना करें कि सूखी लकड़ियों का क्या हाल होगा। [33]''खोपड़ी'' के लिए यूनानी शब्द *cranion* है। डॉक्टर लोग खोपड़ी के लिए ''क्रेनियुम'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। [34]''कलवरी'' (बाइबल के चौथी शताब्दी के लातीनी संस्करण से) का इस्तेमाल अंग्रेज़ी बाइबल KJV में केवल एक बार किया गया है और कई आधुनिक अनुवादों में बिल्कुल नहीं मिलता। तौ भी उस स्थान के बारे में जहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, लोगों को ''अपनी इच्छा से'' कहने दिया जाता है। [35]बाइबल से बाहर के इतिहास के अनुसार, भूमि में सीधा स्तम्भ (the *stipes*) सीधा लगा रहता था और आड़ा शहतीर (the *patibulum*) क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान तक कैदी को ही ले जाना पड़ता था (एडवर्ड्स, गेबल, एण्ड होसमर, 1458-59)। [36]आम तौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्यांश ''कलवरी की पहाड़ी'' है यद्यपि बाइबल यह नहीं कहती कि गुलगुता पहाड़ी पर था। यह शब्दावली शायद आम विचार के कारण है कि यीशु की मृत्यु गोर्डन'स कलवरी पर हुई थी। [37]गोर्डन द्वारा परम्परागत स्थान को ठुकराने का एक कारण यह था कि उसके समय में यह क्षेत्र नगर की दीवारों के *भीतर* था। उसे यह अहसास नहीं हुआ कि यही क्षेत्र मसीह के समय में शहरपनाह के *बाहर* था। दो जगहों पर पुरातत्व प्रमाण की चर्चा जॉन मैक्रे, *आरकियोलॉजी द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1991) 206-17 में दी गई है। [38]सिपाहियों ने यीशु के कपड़े आपस में बांट लिए (मत्ती 27:35)। बाइबल से बाहर का इतिहास इस परम्परा की पुष्टि करता है, और भजन संहिता 22:18 की अंतिम पंक्ति शायद इसी ढंग की बात बताती है। [39]कुछ लोगों का विचार है कि यह पेय उन स्त्रियों द्वारा तैयार किया गया था और यहूदियों को दी जाने वाली रियायत के रूप में इसकी अनुमति दे दी थी। मत्ती ने कहा कि यह खट्टा दाखरस पित्त मिला हुआ था, जबकि मरकुस ने कहा है कि यह मुर्र मिला हुआ था। ये दोनों इस मिश्रण में शामिल किए हो सकते हैं। मुर्र का उल्लेख पंडितों के उपहारों के सम्बन्ध में हमारे अध्ययन में पहले (मत्ती 2:11) और गाड़ने के लिए यीशु की देह को तैयार करने के समबन्ध में किया गया था। (यूहन्ना 19:39)। अन्य उपयोगों के अलावा, मुर्र का इस्तेमाल दवाइयों में भी किया जाता है। [40]वचन में एक जल्लाद का विशेष रूप से उल्लेख नहीं है, परन्तु क्रूस पर चढ़ाने वाले व्यक्ति को कील ठोकने के लिए

विशेष कौशल की आवश्यकता होती थी: यदि काम सही नहीं हुआ, तो कील की टोपी कीलों पर शरीर का भार पड़ने से मांस को चीर सकती थी। जल्लाद उन चार सिपाहियों में से एक हो सकता है, जिन्हें यह काम सौंपा गया था (देखें यूहन्ना 19:23)।

[41]उपलब्ध पुरातत्व प्रमाण से संकेत मिलता है कि ''कील आम तौर पर हथेलियों के बजाय कलाइयों में लगाए जाते थे'' (एडवर्ड्स, गेबल, एण्ड होसमर, 1959)। नया नियम कीलों के चिह्न ''हाथों'' में होने की बात करता है (यूहन्ना 20:25, 27; देखें लूका 24:39, 40), परन्तु ''प्राचीन समय में कलाई को हाथ का भाग माना जाता था'' (एडवर्ड्स, गेबल, एण्ड होसमर, 1462)। [42]घुटनों की स्थिति अलग-अलग जगह अलग-अलग होती थी, कोई सहारा देने के लिए लकड़ी का गुटका लगाता था और कोई नहीं, पर बाइबल इन विभिन्नताओं के बारे में कुछ नहीं बताती। [43]X के आकार वाला क्रूस भी हो सकता है। क्योंकि एक्स के आकार वाले क्रूस पर चढ़ने वाले व्यक्ति के सिर पर कुछ नहीं लिखा जा सकता था, हम जानते हैं कि इस प्रकार का क्रूस यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया। [44]एडवर्ड्स, गेबल एण्ड होसमर, 1458. [45]टिप्पणी 19 देखें। [46]शब्द से ''चोर'' के लिए यूनानी शब्द के विपरीत बलपूर्वक लूटने का संकेत मिलता है: *kleptes,* जिससे हमें अंग्रेज़ी का शब्द ''क्लैप्टोमैनियक'' (चोरी की लत वाला व्यक्ति) मिला है। (डब्ल्यू. ई. वाईन, *द एक्सपैंडड वाईन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपादक जॉन आर. कौहलेनबर्गर III विद जेम्स ए स्वैंसन [मिनियापुलिस: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984], 973)। [47]पूरी लिखावट चारों वृत्तांतों को जोड़कर बनाई जाती है (मत्ती 27:37; मरकुस 15:26; लूका 23:38; यूहन्ना 19:19)। [48]क्योंकि क्रूस पर पिलातुस नहीं बल्कि वे थे, शायद उन्होंने पिलातुस को संदेश भेजा और उसने जवाब भेजा। यह भी हो सकता है कि यद्यपि इस घटना का उल्लेख क्रूसारोहरण के समय तक नहीं है, यह आपत्ति पिलातुस के दरबार में ही उठाई गई हो सकती है जब उन्होंने पहली बार इस पट्टी को देखा था। [49]प्रकाशितवाक्य 2:7 में ''जय पाए'' शब्द ''विजय'' के लिए यूनानी शब्द का क्रिया रूप है।